International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-05-2020; Accepted: 19-05-2020; Published: 06-06-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 19-22

खत्म होने के कगार पर पान कि विरासत महोबा जनपद के विषेष संदर्भ में

अर्चना राजपूत
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

हमारे देष में कृषि व्यवसायीकरण में पान की खेती का खासा महत्व है। कुछ इलाकों में इसका उतना ही महत्व है जितना कि दूसरी खाद्य या नगदी फसलों का है। भारतवर्ष में पान की खेती प्राचीन काल से ही की जाती रही है। अलग– अलग क्षेत्रों में इसे अलग–अलग नाम से पुकारते हैं । इसे संस्कत में नागवल्ली ताम्वूल, हिन्दी भाषी क्षेत्रों में पान नाम से जाना जाता है। पान एक बहुचर्चित वेल है, जिसका उपयोग हमारे देष में पूजा पाठ से लेकर खान पान में भी करते हैं।

भारत में पान की खेती अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग प्रकार से की जाती हैं। जैसे– दक्षिण एंव पूर्वोत्तर क्षेत्रों में जहॉ वारिस अधिक होती हैं नमी ज्यादा रहती है वहां पर पान प्राकृतिक रुप से पैदा किया जाता है। जबकि उत्तर भारत में जहां कड़ाके की गर्मी तथा सर्दी पडती है वहां पान की खेती संरक्षित रुप में की जाती हैं। किसानों और व्यापरियों के मुताविक भारत में पान की 100 से ज्यादा किस्में पायी जाती है।

जिसमें उत्तर प्रदेष के महोबा जनपद का पान की पैदावार में पहला स्थान है। यहां पान की खेती की शुरुआत 9वी शताब्दी में चंदेल शासकों नें की थी। पहले यहा 500 से 600 एकड क्षेंत्रफल में पान की खेती होती थी। लेकिन गुटखा खाने के बढते प्रचलन, सिचाई की समस्या और घटती मॉग प्राकृतिक परिस्थितियां आदि अनेक समस्यओं के कारण मौजूदा समय में इसका क्षेत्रफल सिमट गया है। उन चुनिदा किसानों को जिनकों विरासत में मिली पान की खेती को नुकसान झेलकर भी जिन्दा रखे हुये है, उन्हें पान की खेती का भविष्य अब अन्धेरे में लगता है। पान की समृद्व परम्परा को वह अपनी ऑखों के सामनें दम तोडते हुए देख रहे हैं।

शोध कार्य के उददेष्य

1. जनपद में पान उत्पादन एंव उत्पादकता के स्वरुप का अध्ययन करना।
2. पान उत्पादकों की आय एंव उनके आर्थिक जीवन स्तर को जानना।
3. गुणवत्ता युक्त पान उत्पादन हेतु परम्परागत तथा आधुनिक उपकरणों के प्रचलन का अध्ययन करना।
4. चुनौतियों एंव समस्याओं को ज्ञात करना तथा उनका सुझाव प्रस्तुत करना।
5. पान उत्पादकों का अन्य क्षेत्रों में होने वाले पलायन का अध्ययन करना।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत–षोध अध्ययन का क्षेत्र सम्पूर्ण महोबा जनपद को चयनित किया गया है।

महोबा जनपद उ0प्र0 के दक्षिणी भू भाग में बुन्देलखण्ड विध्यन पठारी भू भाग का एक हिस्सा है।। जिसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल 2884 वर्ग किमी0 है। जिसका विस्तार 25.87^0 उत्तर एवं पूर्वी 79. 87^0 देषान्तर में स्थित है। जनपद की सीमायें उत्तर प्रदेष एंव मध्य प्रदेष के कई जिलों से मिलती है।

यहा नदी प्रणाली के अन्तगर्त धसान, अजुर्न, चन्द्रावल, विरमा, सुखोली आदि नदियां प्रवाहित होती है। यहा कि जलवायु उष्ण कटिवंधीय है।

शोध विधि तन्त्र – प्रस्तुत शोध पत्र वर्णणात्मक शोध प्रविधि के अन्तगर्त सर्वेक्षणात्मक विधि पर आधारित है। यह शोध कार्य मुख्य रुप से प्राथमिक एंव द्वितीयक सूचनाओं पर आधारित हैं।

इन शोध कार्य में द्वितीयक समंकों हेतु विभिन्न श्रोत्रों पान प्रयोग एंव प्रषिक्षण केन्द्र महोबा, कषि विभाग सें प्रकाषित एंव अप्रकाषित सामग्री इसके इलावा सॉख्यिकीय विभाग महोबा सें भी प्रकाषित सूचनाओं द्वारा आकडें एकत्र किये गयें । तथा पत्र पत्रिकाओं प्रतिवेदन, जर्नल, समाचार पत्र, इन्टरनेट बेवसाइटों का भी प्रयोग समंको संकलन हेतु किया गया है।

महोबा जनपद में पान की कृषि

उ0प्र0 के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में महोत्सव नगर के नाम सें विख्यात महोबा जिले में 9वी शताब्दी सें पान की खेती हो रही है। महोबा जनपद पान की खेती के लिये जाना जाता है चंदेल शासकों द्वारा वनवायें गये विभिन्न तालाबों के किनारें पान के वरेजा लगानें का हुनर हजारों परिवारों के पास है लेकिन अव वे पान की खेती सें दूर भागतें जा रहे हैं । 90 के दषक में हजारों लोगों को रोजगार देने वाली पान की खेती सें अव करीब 150 परिवार ही जुडें हैं। खेती का रकवा भी पिछलें 500 एकत्र सें सिमट कर 50 एकड़ पर जा पहुचा है। पान की विरासत को चंदेल शासकों के दौर सें अव तक सहेजने वाले महोबा जनपद में लगभग 90 प्रतिषत किसान नें इसकी खेती छोड दी है।

पान की खेती की विधि

जनपद में पान की खेती हेतु कर्षण कियायें 15 जनवरी कें बाद प्रारम्भ होती हैं। पान की अच्छी खेती के लिये जमीन की गहरी जुताई कर भूमि को खुला छोड देते है। इसके बाद उसकी 2 उथली जुताई करतें हैं। फिर वरेजा का निर्माण किया जाता है। यह प्रकिया 15–20 फरवरी तक पूर्ण करली जाती है। तैयार वरेजों में फरवरी के अन्तिम सप्ताह सें 20 मार्च तक पान वेलों की रोपाई पंक्ति विधि सें दोहरे पान वेल के रूप में की जाती है। पान की प्रत्येक मोड पर जडें होती है। जो समय पाकर मृदा में अपना संचार करती है। और वेल में अंकुरण होने लगता है। पान की वेलों में प्रवर्दवन अच्छा हो जिसके लिये लगायी हुई कलमों को संरक्षण हेतु घास से ढक देते है। और तीन समय जल का छिडकाव करतें है।

पान वेलों के अच्छें प्रवर्धन हेतु वेलों के साथ–साथ सन की खेती भी करते है। जों पान को छाया और सुरक्षा प्रदान करते है। अतः पान की अच्छी खेती के लिये, सावधानी और देखभाल की अत्यन्त आवष्वकता होती है। अच्छी खेती के लिये आवष्यक है कि कम से कम एक वर्ष पूर्व वाली वेल सें पान का पौधा छॉटना चाहिये और इसें रोग रहित करने हेतु वोउों मिश्रण 500 पी0पी0 एम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के घोल में 10 सें 15 मिनट तक डुवोंकर निकालें और वाद में रोपाई करे।

पान की मुख्य किस्में – महोबा देषावरी, कपूरी, बनारसी, मीठा, पाली देषी, कपूरी मीठा, सागर वंग्ला, मघई

पान की खेती के लिये अनुकूल जलवायु

पान एक उष्ण कटिवंधीय पौधा है।

पान की खेती में जलवायु परिस्थितियों का उचित महत्व पाया जाता हैं। क्योकि पान कृषि पूर्णतः जलवायु पर निर्भर है।

जलवायु के कारकों का विवरण निम्न लिखित है–

तापमान– पान तापमान के प्रति अति संवेदनषील पौधा है। इसके विकास के लिये मध्यम तापमान 28–35 डिग्री सेल्सियस की आवष्कता होती है।

आद्रिता– वेल की सर्वाधिक वृद्वि वर्षा काल में होती है। क्योंकि उस समय नमी की मात्रा अधिक होती है। नमी सें तना पत्तियों का विकास होता है।

प्रकाष एंव छाया– सामान्यता 50 प्रतिषत छाया तथा लम्बे समय तक प्रकाष की आवष्यकता होती है।

पान के अच्छे पत्तो के लिये प्रकाष संष्लेषण की क्रिया नियमित होनी चाहिये। जिससे क्लोरोफिल का निमार्ण होता है। उपज अच्छी होती है।

मृदा–पान की वेल हर तरह की जमीन में लगायी जाती है। लेकिन अच्छी पैदावार के लिये लाल मिट्टी, पडुवा मिट्टी,तालाब की काली मिट्टी उपयुर्क्त होती है। ;जिसका च्भ् 7ण्सें 7ण्5 के मध्य हों द्व तथा जमीन का ढाल सही होना चाहिये जिससे वरसात का पानी आसानी सें निकल जायें।

सिचाई व जल निकास की व्यवस्था–पान की खेती में सिचाई का खास महतव है। वोवाई के एक दम वाद मल्चिगंडाल के कर हजारा य लुटिया स्प्रिंकलर सें हल्की सिंचााई करनी चाहियें मौसम के मुताविक 3–4 दिनों में ढाई घंटें के अंतर पर सिचाई करनी चाहिये वरसात में सिचाई की कम जरुरत पडती है। सर्दी में 7–8 दिनों के अन्तराल पर सिचाई करनी पडती है।

पान की वेल वांधना–पोधे 15 सें0 मी0 के हो जाये तो उन्हें रस्सी सें वांधे इससें पान पैदावार में बढोत्तरी होती है।

खाद्य– उर्वरक– जैविक खाद के रुप में पान की खेती में नीम, सरसों, तिल आदि की खली का इस्तेमाल करतें है। इसके अलावा जौ,उडद,दूध, दही,मटठे का भी इस्तेमाल करते है।

पान उपज–जो पान का पत्ता विचडा के साथ रोपड़ में इस्तेमाल किया जाता है। उस पान को वरसात सें पूर्व तोड लिया जाता है। पूरे वर्ष भर में एक पौधें से लगभग 60सें 70 पत्तें प्राप्त हो जाते है। अर्थात पूरे वर्ष में एक हेक्टेयर जमीन सें 60–70 लाख पत्ते की तुडाई की जा सकती है। पान को डंठल सहित तोडा जाता है।

पान कृषि की समस्याये– पान में लगने वाले रोग एंव व्याधिया–

- **पर्णगलन रोग** – इसके कारण पत्तियों पर हल्के भूरे, नम, पनीलें धब्बे दिखाई देते है। बाद में पत्तिया सड जाती है। मुख्य तना जमीन के पास सें सडने के कारण वेल सूख जाती है।

- **जीवाणु जनित पर्ण दाग रोग–** पत्तियों पर काले रंग के हल्के धब्बे जो चारों ओर सें पीले रंग सें घिरे होते है। ये धब्बें आपस में मिलकर बडा धब्बा बनाते है। ग्रसित पत्तिया जमीन पर गिर कर वेल के तने को भी संक्रमित कर देती है। जिससे तने पर काले धब्बे पड जातें है।और वेल सूख जाती है।
- **गंदली रोग–** यह रोग फफूंद द्वारा होता हैं इसका प्रकोप होने पर ग्रसित वेले मरने लगती है। मरी हुई वेल के चारों ओर सफेद रंग की फफूद के जाले तथा भूरे रंग के दाने जमीन पर दिखाई देता है।
- **वुकनी रोग–** इसके प्रकोप सें पत्तों की निचली सतह लाल हो जाती है। एंव ऊपरी सतह पर सफेद रंग का चूर्ण जमा हो जाता है। जिससे पत्तियों गिरने लगती है।
- **सूत्रकृमि द्वारा उत्पन्न रोग–** पान फसल में सूत्रकृमि द्वारा जड़ ग्रथि रोग लगता है। इसके कारण वेलों की वृध्दि की रुक जाती है। एवं पत्तिया पीली एवं आकार में छोटी हो जाती है। और वेल मुरझाकर सूख जाती है।

वदलती परिस्थितियॉ–;पीतलहर, कोहरा, ठंड,वांढ सूखा एवं जलवायु परिवर्तन नें पान की कृषि को वेहद संवेदनशील वना दिया है। 5–6 वर्षो के दौरान वर्षा की मात्रा वहुत कम हो गयी है। लगातार सूखें की स्थिति बढती जा रही है। पानी की कमी का सर्वाधिक असर पान की कृषि पर पडा है। क्योंकि इसें दिन में 3–4 वार पानी देना पडता है। पान की कृषि करने वाले किसान ज्यादा पढे लिखें नही है। वें जलवायु परिवर्तन की वैज्ञानिक षब्दावली सें परिचित नही है। लेकिन स्पष्ट रूप सें मानते है, कि मौसम में आयें बदलाव नें संकट बढांया है।
''पान कों हर अतिषय मौसम सें वचाकर रखना पडता है। गार्मियों में तापमान 45 से 47 डिग्री. से0 पहुच जाता है। अचानक तेज वारिष हो जाती हैं और ठंड में घना कोहरा या पाला पड जाता है। मौसम की ये परिस्थितियों पान की खेती के लिये अनुकूल नही है।

सरकारी उपेक्षा– पान के किसान मौसम की मार के आलावा सरकारी उपेक्षा के भी षिकार है। सिचाई हेतु विजली
व्यवस्था न होना न मुआवजा न सब्सिडी एवं कृषि विकास योजना के तहत उपयुर्क्त अनुदान राषि न मिलना प्रदेष सरकार की किसी योजना का पूर्ण लाभ किसानों को नही मिल पाता है।

लागत का वोझ– पान की खेती की दिन पे दिन बढती लागत से किसान हताष होता जा रहा है। पान की खेती के लिये अधिक धनराषि की आवष्वकता होती है। पहले एक एकड़ में पान की खेती का खर्च 5 लाख रुपयें था। जो अव वढ कर 9 लाख रुपयें हो गया है।

पान की घटती मॉग–गुटका के प्रचलन ने पान की मॉग को घटा दिया है।

कृषकों कों प्रषिक्षण एवं नयी–नयी तकनीकों का आभाव – पान सें संवंधित शोध कार्य एंव कृषकों को प्रषिक्षण व तकनीकी सें सवंधिक जानकारी नही होती है। इसके साथ–साथ वरेजा निर्माण तकनीकी, कटिंग उपचार एंव रोगकीट प्रवंधन से सवंधित ज्ञान का आभाव पाया जाता है। यहा पान प्रषिक्षण केन्द्र सें भी कोई उपयोगी जानकारी और लाभ नही मिल पानें सें किसानों के लियें सफेद हाथी सावित हो रहा है।

समस्या समाधान

1 पान फसल में समेकित रोग प्रंवधन – इन रोगों के प्रवंधन के लिये स्वस्थ एंव रोग रहित बरेजे से ही वोनी हेतु वेल का प्रयोग करे। वोनी, सें पूर्व 0.5 प्रतिषत वोर्डो मिश्रण के घोल में वेलों कों 30 मिनट तक उपचारित करे। मध्य जून सें सितम्बर तक 1 प्रतिषत वोडों मिश्रण द्वारा भूमि का उपचार 30 दिन के अन्तराल पर करें वरेजों कों वहां लगायें जहा पहलें इन रोगों का प्रकोप न हुआ हो।
जीवाणु जनित पर्ण दाग रोग के वचाव के लियें वोनी सें पूर्व वेलों को स्ट्रेप्टोसाइक्लिन पानी में घोलकर उपचारित करें एवं खड़ी फसल में नियत्रण हेतु स्ट्रेप्टोसाइक्लिन घोल का छिडकाव फसल पर 10 सें 15 दिन के अन्तराल पर करतें रहें।
सूत्रकृमि जनित जड ग्रथि रोग कें प्रवंधन हेतु ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें इससें सूत्रकृमि के अंडे एंव डिंवक नष्ट हो जाते है। नीम अथवा महुआ की खली 500 किग्रा0/हेक्टेयर भूमि में मिलानें पर इस रोग को नियन्त्रित किया जा सकता है।

2 पान उत्पादन प्रोत्साहन योजना– पान के महत्व कों देखतें हुयें पहली वार गुणवक्तायुक्त पान उत्पादन प्रोत्साहन योजना जिलें में क्रियान्वित की गई है। इस योजना में पान किसानों कों कुल लागत की 50 प्रतिषत धनराषी अनुदान के तौर पर मिलेगी तथा यह राषि सीधें उनके खातें में जमा की जायेंगी

3 प्रषिक्षण एंव तकनीकी जानकारी

पान सें संवंधित शोध कार्य एवं कृषकों को प्रषिक्षण एंव तकनीकी जानकारी दी जायें जिससें वरेजा निर्माण की तकनीक, कटिग, उपचार, एंव रोग कीट प्रवंधन पर किसानों कों प्रषिक्षण दिया जाये ।

सिचाई हेतु ड्रिप एंव स्प्रिंकलर योजना– ड्रिप सिचाई व स्प्रिंकलर विधि का इस्तेमाल कर किसान कम पानी में फसलों कों अधिक पानी दे सकता है। सिचाई के दौरान पानी की वर्वादी कों रोकनें के लियें वेतहर विकल्प है।

पान फसल कों प्राकृतिक आपदा सें सुरक्षा प्रदान करना

जलवायु परिवर्तन के चलते पान की फसल को वचानें हेतु उचित प्रवंधन की आवष्यकता होती है। जिसकें लिये अधिक धनराषि का खर्च होता है। यदि सरकार इसके प्रति सक्रिय रहें तों पान कृषि को व्यापक स्तर पर किया जा सकता है। इसमें प्रवंधन हेतु पान के साथ–साथ सहफसली खेती भी कर सकतें है। पान के वरेजे वनाकर उनको सुरिक्षत रखा जा सकता है। किसानों की समस्या के निदान हेतु एवं उत्पादकता बढानें हेतु आधुनिक–तकनीकों का समावेष सहित अन्य मुद्दो को सरकार के समझ सुझाव हेतु प्रस्तुत करना चाहिये।

निष्कर्ष– पान हमारे भारतीय इतिहास और परम्पराओं सें जुडा एक वहुवर्षीय वेल है। भारत वर्ष में पान की खेती का इतिहास देखा जायें तो पान के गुणों और परम्पराओं से जुड़ाव की वजह सें प्राचीन काल सें की जानें वाली खेती के रूप में मिलता हैं। पान एक उष्ण कटिवंधीय पौधा हैं तथा इसके पैदावार के लिये अनुकूल परिस्थितयां आवष्यक है। इसकी वढ़वार नम, ठंडे व छायादार वातावरण में अच्छी होती हैं।
महोबा जनपद में चंदेल काल में पान की कृषि को व्यवसाय के रूप में स्वीकार किया गया था।

मुगल काल में भी इसं महत्वपूर्ण स्थान मिला 1905 के गजेटियर में महोबा कों दरीवा पान विपणन केन्द्र कहा गया है। यही सें पान रेलमार्ग सें दिल्ली, मुम्बई, पुणे देष के विभिन्न षहरों में सप्लाई होता था।

एक अनुमान के अनुसार महोबा में 1960 के आस–पास लगभग 150 एकत्र क्षेत्र में पान की खेती होती थी। कालान्तर में यह रकवा घटा हैं क्योंकि पान की कृषि अतिवृष्टि, अनावृष्टि पाला गर्मी, आग आधी, तूफान एंव ओलावृष्टि आदि सभी कारणों से बुरी तरह सें प्रावभित होती है और पान कृषक की कमर टूट जाती है। क्योंकि इसमें रकवा कम लागत अधिक और भरपूर जोखिम है। फलतः इसका कृषि क्षेत्रफल निरंतर घट रहा है और पान कृषक भुखमरी के कगार पर जा रहा है।

यही हालात रहे तों आनें वालें 10 से 15 वर्षो साल में महोबा जनपद सें पान की खेती पूरी तरह सें खत्म हों जायेगी ।

सदर्भ सूची

1. सेन गुप्ता, के : वेटल लीब्स का संरक्षण 11 नवना भारती 28 (12) 580–582 (1960)
2. सामंता सी : पान वेल की खेती की समस्या और समाधान पर रिर्पोट। श्री एच0 आर0 आधिकारी सी0 –2 16 करुणामयी, साल्ट लेक सिटी कोलकाता–64
3. जलवायु (CSIR) 1969
4. https://hindi India water portal.org.
5. www.savita in.farm.nfood.
6. www.downoearth.org.in.